(2) नये अनुभव प्राप्त होते हैं।

(3) प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना सीखते हैं।

(4) शारीरिक श्रम के महत्त्व को समझते हैं।

(4) सकारात्मक प्रवृत्ति का विकास होता है।

(5) कार्य शिल्प शिक्षा के अन्तर्गत दैनिक जीवन से जुड़े उपयोगी सामान को बनाया जा सकता है।

(6) पाठशाला में हर्बल गार्डन बनाया जा सकता है जिसका उपयोग स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निराकरण में किया जा सकता है

कुछ उपयोगी गतिविधियाँ जैसे—

(1) किताबें और कॉपियों की बाइंडिंग करना।

(2) घर विद्यालय में जैविक खाद बनाना।

(3) चाय, कॉफी, शरबत आदि जैसे पेय पदार्थ बनाना।

(4) मिट्टी पेपर मेशी प्लास्टर ऑफ पेरिस मोम के खिलौने बनाना, मिट्टी के गुलदस्ते तैयार करना।

(5) खाद्यान्न तथा फल संरक्षण करना।

(6) विभिन्न घरेलू उपकरणों को ठीक करना।

इन सभी गतिविधियों की जानकारी से छात्रों को भावी जीवन में रोजगार प्राप्ति के लिए आवश्यक कौशलों के विकास में सहायता मिलगी।

इसके अतिरिक्त शिल्प के अन्तर्गत पेन पेन्सिल, पेन होल्डर बनाना या हाथ का पंखा बनाना, मूर्तियाँ बनाना, पुरानी ऊन से पैर पोश बनाना, मोमबत्ती बनाने आदि का सामान, आस-पास से ही उपलब्ध हो जाता है और उसके लिए अतिरिक्त धन की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए संबंधित सामग्री को संग्रहीत किया जाता है।

उपरोक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कार्य कार्य-शिल्प बच्चों को स्वयं करके सीखने का अवसर प्रदान करती है तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से छात्र, विद्यालय, समाज के आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने में भी सहायक होती है।

हमारे ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में ऐसे बहुत से संसाधन हैं जिनका उपयोग कार्य शिक्षा शिल्प-शिक्षा से संबंधित क्रियाकलापों के आयोजन, समन्वय तथा संवर्धन के लिए किया जा सकता है। इन संसाधनों के प्रयोग से विद्यालय के आर्थिक और सामाजिक स्तर में सुधार लाया जा सकता है।

कार्य तथा शिल्प-शिक्षा का शिक्षा-शास्त्रीय महत्त्व
(Pedagogical Values of Work and Craft Education)

कार्य/शिल्प शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा को सुगम बनाकर बालकों में स्वावलम्बन की भावना का विकास करना है, शिल्प शिक्षा वैज्ञानिक ज्ञान है। यह बेहतर जीवन जीने का व्यावहारिक माध्यम है। कार्य शिल्प शिक्षा बालकों में सृजनात्मकता को विकसित करने के सशक्त साधन है। इसके लिए शिक्षक और छात्र दोनों के लिए उचित पाठ्य-चर्या की पुस्तकों का विकास आवश्यक है। उचित कक्षा के लिए उचित हस्तशिल्प की पहचान करना और सामान्य शिक्षा के तहत स्कूल पाठ्यक्रम के माध्यम से कार्यशिक्षा तथा शिल्प शिक्षा का विस्तार करना आवश्यक है। कार्य शिक्षा शिल्प शिक्षा को तीसरी से दसवीं कक्षा के लिए स्कूली समय सारिणी में सम्मिलित करना चाहिए, जिससे कार्यों के प्रति उनकी रुचि बढ़े और उन्हें श्रम के अन्तर्निहित शैक्षणिक सामर्थ्य का भी एहसास हो सके। कार्य शिल्प शिक्षा के कार्यों का चयन बच्चे के मानसिक विकास के चरण या बच्चों के समूह के आधार पर किया जाना चाहिए। स्कूल शिक्षा के विभिन्न स्तर के लिए कार्य शिक्षा शिल्प शिक्षा के पाठ्यक्रम को बनाने के लिए निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान देना जरूरी है—

(1) कार्य का चयन करते समय बच्चे की मनोवैज्ञानिक आयु, उनकी शारीरिक शक्ति और उनके कौशल स्तर जैसे कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

(2) कौशल-विकास पर बल दिया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(15)

(3) पाठ्यक्रम निर्माण करते समय उद्देश्यों को पूरा करने का लक्ष्य सामने रखना चाहिए।
(4) स्कूल की दिनचर्या में आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाना चाहिए।
(5) छात्रों को काम की असली दुनिया की एक झलक दिखानी चाहिए।
(6) उन्हें समाज से सीखने का मौका देना चाहिए।
(7) बालकों के शिक्षण/क्षमताओं के लक्ष्यों के साथ-साथ प्रदत्त अनुभवजन्य अधिगम के लक्ष्यों के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर कार्य/शिल्प शिक्षा के शिक्षाशास्त्रीय महत्व को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

(1) शिक्षक, छात्र और समुदाय के बीच समन्वय बढ़ता है।
(2) कक्षा में समूह तथा अपनत्व की भावना को प्रोत्साहन मिलता है।
(3) बालकों में स्नेह, सुलभ, उत्साहपूर्ण और परवाह करने की क्षमता का विकास होता है?
(4) व्यावसायिक शिष्टाचार को बनाए रखने की क्षमता का विकास होता है।
(5) आत्मनिर्भरता की भावना का विकास होता है।
(6) बालकों में कार्य आधारित बौद्धिक समझ विकसित होती है।
(7) कला और शिल्प के विभिन्न पहलुओं को सीखने से उद्यमशीलता को प्रोत्साहन मिलता है।
(8) विद्यालय को बाहर के जीवन से जोड़ने के अवसर मिलते हैं।

विचारों के आदान-प्रदान, सक्रिय श्रवण और चुनौतीपूर्ण धारणाओं के माध्यम से शिक्षण होता है—

(1) राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों की एक समझ विकसित होती है।
(2) छात्र बहुत बड़ी पृष्ठभूमि के लोगों के साथ प्रभावी ढंग से काम करने के लिए अंतर्वैयक्तिक और अंतर-सांस्कृतिक दक्षताओं का विकास करते हैं।
(3) छात्रों के अंदर नेटवर्किंग, संघर्ष समाधान, सर्वसम्मति निर्माण और वार्ता कौशल विकसित होती है?
(4) छात्र अपने और दूसरों की सामाजिक और सांस्कृतिक समूह की पहचान को मान्यता देते हैं।
(5) विभिन्न चुनिंदा स्थानीय कला और शिल्प के विभिन्न पहलुओं के शिक्षण के माध्यम से उद्यमशीलता को प्रोत्साहन मिलता है।
(6) आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी तरीकों के पाठ्यक्रम में सुधार होगा।
(7) चिंतनशील कार्यप्रणालियों को बढ़ावा मिलेगा।
(8) किसी भी रूढ़िवादिता के बिना व्यवसायों में लैंगिक और सामाजिक समानता बढ़ेगी।
(9) पाठ्यक्रम में निम्नांकित कौशलों को प्राथमिकता देनी चाहिए—जिससे ज्ञान और कौशल के बीच की खाई को पाटने में मदद मिलेगी।

ये कौशल इस प्रकार हैं—

(1) सामाजिक कौशल,
(2) बौद्धिक कौशल,
(3) मनोवैज्ञानिक कौशल,
(4) संबंधपरक कौशल,
(5) रचनात्मक,
(6) अन्तर्बोध,
(7) सार्वजनिक जवाबदेही,
(8) सामाजिक सहानुभूति,
(9) सांस्कृतिक संवेदनशीलता,
(10) वैज्ञानिक मनोवृत्ति,

Scanned with CamScanner

(11) आत्मनिर्भरता,

(12) आत्मविश्वास।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि कार्य को पाठ्यक्रम के हिस्से में पेश करके, सामुदायिक संसाधनों के उपयोग से शिक्षा को सार्थक बनाने के साथ-साथ बालकों को ऐसे ज्ञान एवं कौशल से युक्त करना संभव होगा जो उन्हें उभरती अर्थव्यवस्था में उच्च शिक्षा पाने अथवा आजीविका पाने में सहायता करेगा। इसके लिए शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जिसमें सभी के लिए उत्पादक कार्य के अवसर सुलभ हों। विद्यार्थियों के जीवन में यथा सम्भव बेहतर बनाना ही लक्ष्य है। हमें ऐसी पाठ्यचर्या की आवश्यकता है जो सामाजिक रूप से संवेदनशील हो तथा कार्य व भूमिका के आधार पर लैंगिक विशिष्टता को बढ़ावा न दे। हमें ऐसे पाठ्यक्रम की जरूरत है जो दिव्यांगों को काम करने के अवसर देने को विशेष महत्त्व देता हो, जो प्रीस्कूल स्तर से ही बहुसंवेदी और उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता हो।

यूनिट प्रथम के परीक्षोपयोगी प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कार्य शिक्षा से आप क्या समझते हैं? इसके सामाजिक तथा आर्थिक महत्त्व की विवेचना कीजिए।

2. श्रम की महत्ता को समझाइये। कार्य एवं श्रम के शिक्षाशास्त्रीय महत्त्व को लिखिए।

3. कार्य-शिक्षा के उद्देश्य लिखिए तथा इसके सामाजिक, आर्थिक एवं शिक्षा शास्त्रीय महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

4. कार्य-शिक्षा से संबंधित गतिविधियों की विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कार्य शिक्षा को परिभाषित कीजिए।

2. शिल्प-शिक्षा का महत्त्व लिखिए।

3. श्रम का कार्य-प्रशंसा एवं सन्तुष्टि से क्या संबंध है?

4. शारीरिक श्रम का छात्रों के लिए क्या महत्त्व है?

5. कार्य-शिक्षा के सिद्धान्त बताइये।

6. कार्य-शिक्षा एवं शिल्प का सामाजिक महत्त्व क्या है?

7. कार्य-शिक्षा एवं शिल्प का आर्थिक महत्त्व लिखिए।

8. श्रम को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए दिये जाने वाले दिशा-निर्देशों का वर्णन कीजिए।

9. कार्य-शिक्षा से संबंधित कारक लिखिए।

10. कार्य-शिक्षा में अन्तर्निहित क्षमताओं को लिखिए।

11. कार्य-शिक्षा से संबंधित कौशल बताइए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. कोठारी आयोग ने उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के बुनियादी तत्त्व कौन-से बताये हैं?

2. श्रम को परिभाषित कीजिए।

3. जीविका का क्या अर्थ है?

4. शिल्प शिक्षा का क्या अर्थ है?

5. कौशल से आप क्या समझते हैं?

Scanned with CamScanner